मेवाड़ में 'लिखने के पीछे का सच' विषय पर विचार संगोष्ठी आयोजित

जो भी लिखें समाजहित में लिखें-डाॅ. गीता पांडे

- डायरी लिखने की आदत डालें विद्यार्थी- डाॅ. गदिया

गाजियाबाद। कुछ लोग कमाने के लिए लिख रहे हैं। वे ऐसा न करें। समाजहित में लिखें। लिखने की उपयोगिता के लिए लिखें। मार्केट के हिसाब से किया गया लेखन कभी समाज को नहीं जोड़ सकता। वसुंधरा स्थित मेवाड़ ग्रुप आॅफ इंस्टीट्यूशंस के विवेकानंद सभागार में आयोजित मासिक विचार संगोष्ठी में शम्भु दयाल डिग्री काॅलेज की हिन्दी विभाग प्रभारी डाॅ. गीता पांडे ने बतौर मुख्य वक्ता यह बात कही। वह 'लिखने के पीछे का सच' विषय पर अपने विचार व्यक्त कर रही थीं।

उन्होंने कहा कि जो भी लिखें ताजा लिखें। काॅपी न करें। अपने विवेक से लिखें। इससे आपको याद रहेगा कि आपने क्या लिखा। लिखना विश्वास ही नहीं आत्मविश्वास भी बढ़ाता है। ऐसा लिखें जो अब तक न लिखा गया हो। लिखने का मतलब आपके व्यक्तित्व का विकास। इसके जरिये आप समाज को नई रोशनी देते हो। इसलिए मन के भावों को लिखने से डरें नहीं, उसे लिखें और सबके सामने लायें। उन्होंने कहा कि लिखने के लिए सुविधा नहीं प्रतिभा की आवश्यकता होती है। अनुभूति को प्रसव पीड़ा से गुजरना पड़ता है। आजकल लोग फैशन, ब्लाॅग, यश पाने, व्हाट्सअप, व्यवहार या किसी के कल्याणार्थ लिख रहे हैं, जोकि उचित नहीं है। न्यायप्रियता के बहाने लिखना भी ठीक नहीं है। इसलिए जो लिखें समाज के कल्याण के लिए मन से और ईमानदारी से लिखें।

मेवाड़ ग्रुप आॅफ इंस्टीट्यूशंस के चेयरमैन डाॅ. अशोक कुमार गदिया ने कहा कि लिखने की आदत डालिये। विशेष परिस्थितियों से बाहर आने के लिए लेखन आपकी बहुत मदद करता है। आप तनावमुक्त होते हैं। मन का विकार लेखन के जरिये दूर कीजिये। विद्यार्थी रोजाना डायरी लेखन करें। इससे व्यक्तित्व, सोच और विवेक में बदलाव आता है। सोच गलत हो सकती है मगर लेखन गलत कभी नहीं होगा। इसलिए सोच से ज्यादा लिखना अच्छा होता है। इस मौके पर उन्होंने डाॅ. गीता पांडे को शाॅल व स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया। संगोष्ठी में मेवाड़ इंस्टीट्यूशंस की निदेशिका डाॅ. अलका अग्रवाल समेत तमाम शिक्षण, गैर शिक्षण स्टाफ व विद्यार्थी मौजूद थे। संगोष्ठी का सफल संचालन अमित पाराशर ने किया।

विचार संगोष्ठी
विषय : 'लिखने के पीछे का सच'
मुख्य वक्ता
डॉ. गीता पाण्डे
डॉ. गीता पाण्डे

MEWAR
INSTITUTE

MEWAR

डॉ. गीता पाण्डे
प्रभारी, हिन्दी विभाग,
शम्भु दयाल डिग्री कॉलेज, गाज़ियाबाद
मंगलवार, 31 अक्टूबर, 2017 – दोपहर 2:
डॉ. गीता पाण्डे